

## 2 तीमुथियुस

### तिमुथियुस के नाम

**1** पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित है और जिसे यीशु मसीह में जीवन पाने की प्रतिज्ञा का प्रचार करने के लिये भेजा गया है:

<sup>2</sup>प्रिय पुत्र तीमुथियुस के नाम। परम पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुझे करुणा, अनुग्रह और शांति प्राप्त हो।

### धन्यवाद तथा प्रोत्साहन

<sup>3</sup>रात दिन अपनी प्रार्थनाओं में निरन्तर तुम्हारी याद करते हुए, मैं उस परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, और उसकी सेवा अपने पूर्वजों की रीति के अनुसार शुद्ध मन से करता हूँ। <sup>4</sup>मेरे लिये तुमने जो आँसू बहाये हैं, उनकी याद करके मैं तुमसे मिलने को आतुर हूँ, ताकि आनन्द से भर उठूँ। <sup>5</sup>मुझे तेरा वह सच्चा विश्वास भी याद है जो पहले तेरी नानी लोईस और तेरी माँ यूनीके में था। मुझे भरौसा है कि वही विश्वास तुझमें भी है। <sup>6</sup>इसीलिये मैं तुझे याद दिला रहा हूँ कि परमेश्वर के बरदान की उस ज्वाला को जलाये रख जो तुझे तब प्राप्त हुई थी जब तुझ पर मैंने अपना हाथ रखा था। <sup>7</sup>क्योंकि परमेश्वर ने हमें जो आत्मा दी है, वह हमें कायर नहीं बनाती बल्कि हमें प्रेम, संयम और शक्ति से भर देती है।

<sup>8</sup>इसलिये तू हमारे प्रभु या मेरी जो उसके लिये बंदी बना हुआ है, साक्षी देने से लजा मत। बल्कि तुझे परमेश्वर ने जो शक्ति दी है, उससे सुसमाचार के लिये यातनाएँ झेलने में मेरा साथ दे। <sup>9</sup>उसी ने हमारी रक्षा की है और पवित्र जीवन के लिये हमें बुलाया है—हमारे अपने किये कर्मों के आधार पर नहीं, बल्कि उसके अपने उस प्रयोजन और अनुग्रह के अनुसार जो परमेश्वर द्वारा यीशु मसीह में हमें पहले ही अनादि काल से सौंप दिया गया है।

<sup>10</sup>किन्तु अब हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के प्रकट होने

के साथ-साथ हमारे लिये प्रकाशित किया गया है। उसने मृत्यु का अंत कर दिया तथा जीवन और अमरता को सुसमाचार के द्वारा प्रकाशित किया है। <sup>11</sup>इसी सुसमाचार को फैलाने के लिये मुझे एक प्रचारक, प्रेरित और शिक्षक के रूप में नियुक्त किया गया है। <sup>12</sup>और यही कारण है जिससे मैं इन बातों का दुख उठा रहा हूँ। और फिर भी लज्जित नहीं हूँ क्योंकि जिस पर मैंने विश्वास किया है, मैं उसे जानता हूँ और मैं यह मानता हूँ कि उसने मुझे जो सौंपा है, वह उसकी रक्षा करने में समर्थ है जब तक वह दिन\* आये, <sup>13</sup>उस उत्तम शिक्षा को जिसे तूने मुझसे यीशु मसीह में प्राप्त होने वाले विश्वास और प्रेम के साथ सुना है तू जो सिखाता है उसका आदर्श वही उत्तम शिक्षा है। <sup>14</sup>हमारे भीतर निवास करने वाली पवित्र आत्मा के द्वारा तू उस बहुमूल्य धरोहर की रखवाली कर जिसे तुझे सौंपा गया है।

<sup>15</sup>जैसा कि तू जानता है कि वे सभी जो एशिया में रहते हैं, मुझे छोड़ गये हैं। फुगिलुस और हिरमुगिनेस उन्हीं में से हैं। <sup>16</sup>उनेसिफिरुस के परिवार पर प्रभु अनुग्रह करे। क्योंकि उसने अनेक अवसरों पर मुझे सुख पहुँचाया है। तथा वह मेरे जेल में रहने से लज्जित नहीं हुआ है। <sup>17</sup>बल्कि वह तो जब रोम आया था, जब तक मुझसे मिल नहीं लिया, यत्नपूर्वक मुझे ढूँढता रहा। <sup>18</sup>प्रभु करे उसे, उस दिन प्रभु की ओर से दया प्राप्त हो, उसने इफिसुस में मेरी तरह तरह से जो सेवाएँ की हैं तू उन्हें बहुत अच्छी तरह जानता है।

### मसीह यीशु का सच्चा सिपाही

**2** जहाँ तक तुम्हारी बात है, मेरे पुत्र, यीशु मसीह में प्राप्त होने वाले अनुग्रह से सुदृढ़ हो जा। <sup>2</sup>बहुत से

वह दिन अर्थात् वह दिन जब सभी लोगों का न्याय करने के लिए यीशु मसीह आएगा और उन्हें अपने साथ रहने के लिए ले जाएगा।

लोगों की साक्षी में मुझसे तूने जो कुछ सुना है, उसे उन विश्वास करने योग्य व्यक्तियों को सौंप दे जो दूसरों को भी शिक्षा देने में समर्थ हों।<sup>3</sup> यातनाएँ झेलने में मसीह यीशु के एक उत्तम सैनिक के समान मेरे साथ आ मिला।<sup>4</sup> 'ऐसा कोई भी, जो सैनिक के समान सेवा कर रहा है, अपने आपको साधारण जीवन के जंगल में नहीं फँसाता क्योंकि वह अपने शासक अधिकारी को प्रसन्न करने के लिये यत्नशील रहता है।'<sup>5</sup> और ऐसे ही यदि कोई किसी दौड़ प्रतियोगिता में भाग लेता है, तो उसे विजय का मुकुट उस समय तक नहीं मिलता, जब तक कि वह नियमों का पालन करते हुए प्रतियोगिता में भाग नहीं लेता।<sup>6</sup> परिश्रमी कामगार किसान ही उपज का सबसे पहला भाग पाने का अधिकारी है।<sup>7</sup> मैं जो बताता हूँ, उस पर विचार कर। प्रभु तुझे सब कुछ समझने की क्षमता प्रदान करेगा।

<sup>8</sup> यीशु मसीह का स्मरण करते रहो जो मेरे हुआँ में से पुनर्जीवित हो उठा है और जो दाऊद का वंशज है। यही उस सुसमाचार का सार है जिसका मैं उपदेश देता हूँ।<sup>9</sup> इसी के लिये मैं यातनाएँ झेलता हूँ। यहाँ तक कि एक अपराधी के समान मुझे जंजीरों से जकड़ दिया गया है। किन्तु परमेश्वर का वचन तो बंधन रहित है।<sup>10</sup> इसी कारण परमेश्वर के चुने हुए लोगों के लिये मैं हर दुःख उठाता रहता हूँ ताकि वे भी मसीह यीशु में प्राप्त होने वाले उद्धार को अनन्त महिमा के साथ प्राप्त कर सकें।

<sup>11</sup> यह वचन विश्वास के योग्य है कि:

यदि हम उसके साथ मरे हैं,  
तो उस ही के साथ जीयेंगे,

<sup>12</sup> यदि दुःख उठाये हैं

तो उसके साथ शासन भी करेंगे।

यदि हम उसको छोड़ तर्जेंगे,  
तो वह भी हमको तज देगा,

<sup>13</sup> हम चाहे विश्वास हीन हों

पर वह सदा सर्वदा विश्वासनीय रहेगा  
क्योंकि नहीं हो सकता है

वह आत्म निषेधी,

अपने ही प्रति, मिथ्या वादी।

### स्वीकृत कार्यकर्ता

<sup>14</sup> लोगों को इन बातों का ध्यान दिलाते रहो और परमेश्वर को साक्षी करके उन्हें सावधान करते रहो कि

वे शब्दों को लेकर लड़ाई झगड़ा न करें। ऐसे लड़ाई झगड़ों से कोई लाभ नहीं होता, बल्कि इन्हें जो सुनते हैं, वे भी नष्ट हो जाते हैं।<sup>15</sup> अपने आप को परमेश्वर द्वारा ग्रहण करने योग्य बनाकर एक ऐसे सेवक के रूप में प्रस्तुत करने का यत्न करते रहो जिससे किसी बात के लिये लज्जित होने की आवश्यकता न हो। और जो परमेश्वर के सत्य वचन का सही ढंग से उपयोग करता है।<sup>16</sup> और सांसारिक वाद विवादों तथा व्यर्थ की बातों से बचा रहता है। क्योंकि वे बातें लोगों को परमेश्वर से दूर ले जाती हैं।<sup>17</sup> ऐसे लोगों की शिक्षाएँ नासूर की तरह पैलेंगी। हुमिनियुस और फिलेतुस ऐसे ही हैं।<sup>18</sup> जो सचाई के बिन्दु से भटक गये हैं। उनका कहना है कि पुनरुत्थान तो अब तक हो भी चुका है। ये कुछ लोगों के विश्वास को नष्ट कर रहे हैं।<sup>19</sup> कुछ भी हो परमेश्वर ने जिस सुदृढ़ नींव को डाला है, वह दृढ़ता के साथ खड़ी है। उस पर अंकित है, "प्रभु अपने भक्तों को जानता है।"\* और "वह हर एक, जो कहता है कि वह प्रभु का है, उसे बुराइयों से बचे रहना चाहिये।"

<sup>20</sup> एक बड़े घर में बस सोने-चाँदी के ही पात्र तो नहीं होते हैं, उसमें लकड़ी और मिट्टी के बरतन भी होते हैं। कुछ विशेष उपयोग के लिए होते हैं और कुछ साधारण उपयोग के लिये।<sup>21</sup> इसलिये यदि व्यक्ति अपने आपको बुराइयों से शुद्ध कर लेता है तो वह विशेष उपयोग का बनेगा और फिर पवित्र बन कर अपने स्वामी के लिये उपयोगी सिद्ध होगा। और किसी भी उत्तम कार्य के लिए तत्पर रहेगा।

<sup>22</sup> ज्वानी की बुरी इच्छाओं से दूर रहो धार्मिक जीवन, विश्वास, प्रेम और शांति के लिये उन सब के साथ जो शुद्ध मन से प्रभु का नाम पुकारते हैं, प्रयत्नशील रहो।<sup>23</sup> मूर्खतापूर्ण, बेकार के तर्क वितर्कों से सदा बचे रहो। क्योंकि तुम जानते ही हो कि इनसे लड़ाई-झगड़े पैदा होते हैं।<sup>24</sup> और प्रभु के सेवक को तो झगड़ना ही नहीं चाहिये। उसे तो सब पर दया करनी चाहिये। उसे शिक्षा देने में योग्य होना चाहिये। उसे सहनशील होना चाहिये।<sup>25</sup> उसे अपने विरोधियों को भी इस आशा के साथ कि परमेश्वर उन्हें भी मन फिराव करने की शक्ति देगा, विनम्रता के साथ समझाना चाहिये। ताकि उन्हें भी सत्य का ज्ञान हो जाये<sup>26</sup> और वे सचेत हो कर शैतान के उस

"प्रभु ... है" गिनती 16:5

फन्दे से बच निकलें जिसमें शैतान ने उन्हें जकड़ रखा है ताकि वे परमेश्वर की इच्छा का अनुसरण कर सकें।

### अंतिम दिनों में

**3** याद रखो अंतिम दिनों में हम पर बहुत बुरा समय आयेगा। <sup>2</sup>लोग स्वार्थी, लालची, अभिमानी, उद्वण्ड, परमेश्वर के निन्दक, माता-पिता की अवहेलना करने वाले, निर्दय, अपवित्र, <sup>3</sup>प्रेम रहित, क्षमा-हीन, निन्दक, असंयमी, बर्बर, जो कुछ अच्छा है उसके विरोधी, <sup>4</sup>विश्वासघाती, अविवेकी, अहंकारी और परमेश्वर-प्रेमी होने की अपेक्षा सुखवादी हो जायेंगे। <sup>5</sup>वे धर्म के दिखावटी रूप का पालन तो करेंगे किन्तु उसकी भीतरी शक्ति को नकार देंगे। उनसे सदा दूर रहो। <sup>6</sup>क्योंकि इनमें से कुछ ऐसे हैं जो घरों में घुस पैठ करके पापी, दुर्बल इच्छा शक्ति की पापपूर्ण हर प्रकार की इच्छाओं से चलायमान स्त्रियों को वश में कर लेते हैं। <sup>7</sup>वे स्त्रियाँ सीखने का जतन तो सदा करती रहती हैं, किन्तु सत्य के सम्पूर्ण ज्ञान तक वे कभी नहीं पहुँच पातीं। <sup>8</sup>यन्त्रेस और यन्त्रेस ने जैसे मूसा का विरोध किया था, वैसे ही ये लोग सत्य के विरोधी हैं। इन लोगों की बुद्धि भ्रष्ट है और विश्वास का अनुसरण करने में ये असफल हैं। <sup>9</sup>किन्तु ये और अधिक आगे नहीं बढ़ पायेंगे क्योंकि जैसे यन्त्रेस और यन्त्रेस की मूर्खता प्रकट हो गयी थी, वैसे ही इनकी मूर्खता भी सबके सामने उजागर हो जायेगी।

### अंतिम आदेश

<sup>10</sup>कुछ भी हो, तूने मेरी शिक्षा का पालन किया है। मेरी जीवन-पद्धति, मेरे जीवन के उद्देश्य, मेरे विश्वास, मेरी सहनशीलता, मेरे प्रेम, मेरे धैर्य <sup>11</sup>मेरी उन यातनाओं और पीड़ाओं में मेरा साथ दिया है तुम तो जानते ही हो कि अंताकिया, इकुनियुम और लुन्वा में मुझे कितनी भयानक यातनाएँ दी गयी थीं जिन्हें मैंने सहा था। किन्तु प्रभु ने उन सबसे मेरी रक्षा की। <sup>12</sup>वास्तव में परमेश्वर की सेवा में जो नेकी के साथ जीना चाहते हैं, सताये ही जायेंगे। <sup>13</sup>किन्तु पापी और ठग दूसरों को छलते हुए तथा स्वयं छले जाते हुए बुरे से बुरे होते चले जायेंगे।

<sup>14</sup>किन्तु तुमने जिन बातों को सीखा और माना है, उन्हें करते जाओ। तुम जानते हो कि उन बातों को तुमने किससे सीखा है। <sup>15</sup>और तुझे पता है कि तू बचपन से ही

पवित्र शास्त्रों को भी जानता है। वे तुझे उस विवेक को दे सकते हैं जिससे मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा छुटकारा मिल सकता है। <sup>16</sup>सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है। वह लोगों को सत्य की शिक्षा देने, उनको सुधारने, उन्हें उनकी बुराइयों दर्शाने और धार्मिक जीवन के प्रशिक्षण में उपयोगी है। <sup>17</sup>जिससे परमेश्वर का प्रत्येक सेवक शास्त्रों का प्रयोग करते हुए हर प्रकार के उत्तम कार्यों को करने के लिये समर्थ और साधन सम्पन्न होगा।

**4** परमेश्वर को साक्षी करके और मसीह यीशु को अपनी साक्षी बना कर जो सभी जीवितों और जो मर चुके हैं, उनका न्याय करने वाला है, और क्योंकि उसका पुनः आगमन तथा उसका राज्य निकट है, मैं तुझे शपथ पूर्वक आदेश देता हूँ: <sup>2</sup>सुसमाचार का प्रचार कर। चाहे तुझे सुविधा हो चाहे असुविधा, अपना कर्तव्य करने को तैयार रह। लोगों को क्या करना चाहिये, उन्हें समझा। जब वे कोई बुरा काम करें, उन्हें चेतावनी दे। लोगों को धैर्य के साथ समझाते हुए प्रोत्साहित कर। <sup>3</sup>मैं यह इसलिये बता रहा हूँ कि एक समय ऐसा आयेगा जब लोग उत्तम उपदेश को सुनना तक नहीं चाहेंगे। वे अपनी इच्छाओं के अनुकूल अपने लिए बहुत से गुरु इकट्ठे कर लेंगे, जो वही सुनाएँगे जो वे सुनना चाहते हैं। <sup>4</sup>वे अपने कानों को सत्य से फेर लेंगे और कल्पित कथाओं पर ध्यान देने लगेंगे। <sup>5</sup>किन्तु तू निश्चयपूर्वक हर परिस्थिति में अपने पर नियन्त्रण रख, यातनाएँ झेल और सुसमाचार के प्रचार का काम कर। जो सेवा तुझे सौंपी गयी है, उसे पूरा कर।

<sup>6</sup>जहाँ तक मेरी बात है, मैं तो अब अर्घ के समान उँडला जाने पर हूँ। और मेरा तो इस जीवन से विदा लेने का समय भी आ पहुँचा है। मैं उत्तम प्रतिस्पृद्धा में लगा रहा हूँ। मैं अपनी दौड़ दौड़ चुका हूँ। मैंने विश्वास के पन्थ की रक्षा की है। <sup>8</sup>अब विजय मुकुट मेरी प्रतीक्षा में है। जो धार्मिक जीवन के लिये मिलना है। उस दिन न्यायकर्ता प्रभु मुझे विजय मुकुट पहनायेगा। न केवल मुझे, बल्कि उन सब को जो प्रेम के साथ उसके प्रकट होने की बात जोहते रहे हैं।

### निजी संदेश

<sup>9</sup>मुझे जितना शीघ्र हो सके, मिलने आने का पूरा प्रयत्न करना। <sup>10</sup>क्योंकि इस जगत के मोह में पड़ कर

देमास ने मुझे त्याग दिया है और वह थिस्सलुनी के चला गया है। क्रेस कैस गलातिया को तथा तीतुस दलमतिया को चला गया है। <sup>11</sup>केवल लूका ही मेरे पास है। मरकुस के पास जाना और जब तू आये, उसे अपने साथ ले आना क्योंकि मेरे काम में वह मेरा सहायक हो सकता है। <sup>12</sup>तिखिकुस को मैं इफिन्सुस भेज रहा हूँ।

<sup>13</sup>जब तू आये, तो उस कोट को, जिसे मैं त्रोआस में करपुस के घर छोड़ आया था, ले आना। मेरी पुस्तकों, विशेष कर चर्म-पत्रों को भी ले आना।

<sup>14</sup>ताम्रकार सिकन्दर ने मुझे बहुत हानि पहुँचाई है। उसने जैसा किया है, प्रभु उसे वैसा ही फल देगा। <sup>15</sup>तू भी उस से सचेत रहना क्योंकि वह हमारे उपदेश का घोर विरोध करता रहा है।

<sup>16</sup>प्रारम्भ में जब मैं अपना बचाव प्रस्तुत करने लगा तो मेरे पक्ष में कोई सामने नहीं आया। बल्कि उन्होंने तो मुझे अकेला छोड़ दिया था। परमेश्वर करे उन्हें इसका हिसाब न देना पड़े। <sup>17</sup>मेरे पक्ष में तो प्रभु ने खड़े

होकर मुझे शक्ति दी। ताकि मेरे द्वारा सुसमाचार का भरपूर प्रचार हो सके, जिसे सभी गैर यहूदी सुन पायें। सिंह के मुँह से मुझे बचा लिया गया है। <sup>18</sup>किसी भी पापपूर्ण हमले से प्रभु मुझे बचायेगा और अपने स्वर्गीय राज्य में सुरक्षा पूर्वक ले जायेगा। उसकी महिमा सदा सदा होती रहे। आमीन।

### पत्र का समापन

<sup>19</sup>प्रिसकिल्ला, अक्विला और उनेसिफुरुस के परिवार को नमस्कार कहना। <sup>20</sup>इरास्तुस कुरिन्थुस में ठहर गया है। मैंने त्रुफिमुस को उसकी बीमारी के कारण मिलेतुस में छोड़ दिया है।

<sup>21</sup>जाड़ों से पहले आने का जतन करना। यूबुलुस, पूर्देस, लिनुस तथा क्लौडिया तथा और सभी भाइयों का तुझे नमस्कार पहुँचे।

<sup>22</sup>प्रभु तेरे साथ रहे। तुम सब पर प्रभु का अनुग्रह हो।

# License Agreement for Bible Texts

World Bible Translation Center

Last Updated: September 21, 2006

Copyright © 2006 by World Bible Translation Center

All rights reserved.

## These Scriptures:

- Are copyrighted by World Bible Translation Center.
- Are not public domain.
- May not be altered or modified in any form.
- May not be sold or offered for sale in any form.
- May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online ad space).
- May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included.
- May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™ © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read Version™ in English) must appear at the end of each quotation.

Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at [distribution@wbtc.com](mailto:distribution@wbtc.com).

World Bible Translation Center

P.O. Box 820648

Fort Worth, Texas 76182, USA

Telephone: 1-817-595-1664

Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE

E-mail: [info@wbtc.com](mailto:info@wbtc.com)

**WBTC's web site** – World Bible Translation Center's web site: <http://www.wbtc.org>

**Order online** – To order a copy of our texts online, go to: <http://www.wbtc.org>

**Current license agreement** – This license is subject to change without notice. The current license can be found at: <http://www.wbtc.org/downloads/biblelicense.htm>

**Trouble viewing this file** – If the text in this document does not display correctly, use Adobe Acrobat Reader 5.0 or higher. Download Adobe Acrobat Reader from: <http://www.adobe.com/products/acrobat/readstep2.html>

**Viewing Chinese or Korean PDFs** – To view the Chinese or Korean PDFs, it may be necessary to download the Chinese Simplified or Korean font pack from Adobe. Download the font packs from: <http://www.adobe.com/products/acrobat/acrrasianfontpack.html>